मुहम्मद तुग़लक के काल में विद्रोहों तथा ख़लीफ़ा के प्रति सम्बन्ध

Ranvir Singh [1], Babli Rani [2]

[1] Research Scholar, [2] Research Supervisor, Associate Professor,
Department of History, Sunrise University,
Rajasthan.

Published in IJIRMPS (E-ISSN: 2349-7300), Volume 11, Issue 1, (January-February 2023)

License: Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License

Abstract

मुहम्मद तुग़लक ने अपने पिता से उत्तराधिकार में एक विशाल साम्राज्य पाया और अपने शासन के प्रथम दशक में उसका और अधिक विस्तार किया। हिमालय की तराई से द्वार-समुन्द्र तक और थट्टा से लख़नौती तक समस्त प्रदेश उसके अधिकार में आ गया था। समस्त दक्षिण उसके दूरस्थ प्रदेशों, माबर तथा वारंगल सहित उसकी आज्ञा पालन करता था। पश्चिम घाट की स्वतंत्र रियासतों अर्थात संदापुर, हिन्नौर, मनजरूर, जूराफ़तन, दहफ़तन, बुदफ़तन और कालीकट ने उसकी सर्वसत्ता स्वीकार की। इससे पूर्व दिल्ली के इतिहास में सुल्तान की सत्ता तथा प्रतिष्ठा कभी इतनी ऊँचाई तक नहीं पहुची थी।

Introduction

बरनी के अनुसार, ''मुहम्मद तुग़लक के राज्य के उन थोड़े से वर्षों में बड़ी विचित्र सुव्यवस्था एवं अनुशासन दृष्टिगत हुआ था। अनेक स्थानों पर निरन्तर विजय प्राप्त हुई। जिस स्थान पर भी विजय प्राप्त हुई, वहां वली नायब तथा अमिल नियुक्ति हो जाते थे। इक़लीम तथा निकट एवं दूर के प्रदेश किसी भी राज्य काल तथा किसी भी सुल्तान के समय में इस प्रकार सुव्यवस्थित न हुए थे। धन खराज़, उपहार तथा भेंट के रूप में जितना उन वर्षों दिल्ली में आया उतना खराज़ किसी भी राज्यकाल में न प्राप्त हुआ था। यदि उपर्युक्त विचारों को देखे तो लगता है कि मुहम्मद तुग़लक के शासन के आरम्भ तक तो पूर्णतय शांति व सुव्यवस्था थी, परन्तु मुहम्मद तुग़लक के शासन काल में एक के बाद एक विद्रोह हुए।

देवगिरी अभियान पर स्वयं सुल्तान बरनी से परामर्श करता हुआ कहता है, ''मेरा राज्य रूग्ण हो गया है और यह रोग किसी प्रकार समाप्त नही होता। जिस प्रकार यदि कोई हक़ीम सिर की पीड़ा की चिकित्सा करता है तो ज्वर बढ़ जाता है। यदि ज्वर को दूर करने का प्रयास करता है तो सुद्दे पड़ जाते हैं। उसी प्रकार मेरा राज्य भी रोगी हो गया है। यदि एक और सुव्यवस्थित करता हू तो दूसरी तरफ अव्यवस्था उत्पन्न हो जाती है। यदि मैं एक दिशा को सुशासित कर लेता हू तो दूसरी तरफ अशांति फैल जाती है।''

इन विद्रोहों के पीछे क्या कारण रहे होंगे ? समकालीन इतिहासकारों से लेकर अब तक इतिहासकारों ने अपनी-अपनी विस्तृत व्याख्याएं दी है। समकालीन इतिहासकार बरनी अपनी पुस्तक के दूसरे संस्करण में इन विद्रोह के लिए सुल्तान की अव्यावहारिक योजनाओं को जिम्मेवार ठहराता है। बरनी लिखता है कि सुल्तान मुहम्मद तुग़लक युवावस्था ही से ऐसी बातें करने का प्रयास किया करता था, जिनका होना सम्भव नहीं था। इस प्रकार की

महत्वकांक्षाओं तथा दूर और निकट के स्थानों पर अधिकार जमाने और विजय किए हुए प्रदेशो को सुव्यवस्थित करने की अभिलाषा का परिणाम यह था कि वह नये-नये आदेश निकाला करता था। नये-नये आदेशोंनुसार इक़लीमों तथा निकट और दूर के वालियों, मुक़्तों कराने के लिए विवश किया जाता था। इसमें असमर्थ रहने तथा देर करने के कारण पदाधिकारियों को कठोर दण्ड दिये जाते थे। उनका स्थानतरण कर दिया जाता था। चूंकि वाली और मुक़्तों को नये आदेशों का पालन करना, जो कि कल्पना पर निर्भर थे, असम्भव ज्ञात होता था। अतः उससे सर्वसाधारण में घृणा उत्पन्न हो जाती थी। यदि वे इक़लीमों तथा प्रदेशों मं उन आदेशों का प्रचार करते तथा उन्हें कार्यान्वित कराते और जब लोग उसे न कर पाते और विरोध प्रारम्भ कर देते थे। शासन व्यवस्था में विघ्न पड़ जाता तथा सुव्यवस्थित अवस्था में गड़बड़ी पैदा हो जाती।

इब्नबत्तूता विद्रोह के लिए कोई एक निश्चित कारण नहीं देता है। वह हर विद्रोह के लिए अलग अलग कारण दिए हैं। परन्तु उसके विवरण में इतना निश्चित है वह किसी भी विद्रोह के लिए सुल्तान मुहम्मद तुग़लक को दोषी नहीं ठहराता है। आधुनिक इतिहाकारों ने बरनी के दिए गए कारणों का खण्डन किया है तथा अपने-अपने तर्क दिए है। हबीब व निज़ामी ने भूगौलिक अड़चनों को कारण माना है। वे लिखते हैं कि इतने विशाल सम्राज्य पर चैंदवही शताब्दी में नियंत्रण रखना अत्यंत कठिन था। विशेषतः भूगौलिक अड़चनों तथा सीमित यातायात के साधन देखते हुए उन दिनों स्थानीय स्वार्थो द्वारा केन्द्रीय नियंत्रण दुर्बल करने के लिए अनुचित लाभ उठाया जाता था। फिर भी सुल्तान ने अपनी संगठन क्षमता तथा साधन सम्पन्नता को विशाल सम्राज्य के प्रत्येक भाग को अपने व्यक्तिगत नियन्त्रण में रखने हेतु प्रयोग किया। बरनी हमें लिखता है कि जब कभी सम्राज्य में नया क्षेत्र शामिल किया जाता था, तो वहां सम्राज्य में तुरन्त अधिकारी वर्ग की पूर्ण श्रेणी नियुक्ति की जाती थी और राजस्व के सीधे संग्रह का प्रबंध किया जाता था। जब सुल्तान ने दौलताबाद में प्रभावशाली शासन केंद्र स्थापित करने का प्रयत्न किया। उस समय उसके मन में दिल्ली से दक्षिण को नियंत्रित करने की बड़ी कठिनाईयां थी। फिर भी यह प्रयास संम्भवतः भूगौलिक अड़चनों को नष्ट नहीं कर सका और विघटन की प्रक्रिरया यद्यपि बलवती रही किंतु रोकी नहीं जा सकी।

यद्यपि सुल्तान अपने प्रयत्न में तत्पर रहा किंतु मध्यकालीन यातायात तथा संचार व्यवस्था में इतना विशालकाया ढ़ांचा स्थिर रखना असम्भव था। विकेन्द्रीकरण प्रवृत्तियों को, जिन्होनें अपना प्रभाव डालना आरम्भ किया, से सहायता मिली। भंयकर अकाल व प्लेग से जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि केन्द्रीय सेना को एक सम्पूर्ण दशक के लिए लुजपुज कर दिया तथा कठोर प्राण दण्ड से, जिनसे सुल्तान ने लोंगो को अज्ञाकारी बनाने की आशा की किंतु जिससे अधिकाधिक विद्रोह उकसे।

अन्य इतिहासकार पीटर जैक़्सन इस मत का समर्थन तो करते हं परन्तु आर्थिक कारणों को भी जोड़ देते हैं। वे लिखते हैं कि मुहम्मद तुग़लक गद्दी पर बैठने के साथ ही राज्यों को लूटने और वर्षिक ख़राज लेने को स्थान पर धीरे-धीरे सीधा शासन करने की निति ने ले लिया। इस प्रकार के विशाल प्रदेशों को राज्य में मिलाने से इन प्रदेशों की समस्याएं भी राज्य से जुड़ गयी। शायद ये ही आर्थिक समस्या उत्पन्न करने के प्रमुख कारक थे। जिन्होंने 1330 में सल्तनत को पलट दिया था। एक विशाल सेना के खर्च के लिए शत्रु के क्षेत्रों नियमित आक्रमण करना एक अलग बात थी और एक विशाल सेना का रखना और विजित प्रदेशों का प्रशासन का खर्च वार्षिक खर्च में जुड़ जाना एक अलग बात थी तथा नए विजित प्रदेशों से उसी लूटने वाली निति से व्यवहार नही किया जा सकता था। इस प्रकार सल्तनत को दोहरी हानि हुई। एक तो सोने की आवत के संदर्भ में जो अलाउद्दीन व मलिक काफ़ूर के अभियानों से बड़ी मात्रा में आती थी। इस समस्या को मुहम्मद तुग़लक असाधारण खर्चों और दानशीलता ने और भी बढ़ा दिया था।

साथ ही वे ये मानते है कि 727 हि°/1327-28 में हुए विद्रोह के पीछे सुल्तान के द्वारा प्रान्तीय क्षेत्रों में अपने अधिकारों में वृद्धि के आरम्भिक प्रयासों के कारण हुआ था। जैसे बरनी लिखता है कि खरीत्तेदार के दफ्तर से रोजाना सौ से दो

सौ आदेश वलीयों और मुक़्ताओं तक पहुचाने के लिए भेजे जाते थे। ये इस बात का प्रतीक था कि नया सुल्तान आरम्भ से ही प्रांतीय क्षेत्रों के मामलें में अपने पूर्व के शासकों से अधिक नियन्त्रण रखना चाहता था। बड़े प्रातीय गर्वनरों को ऐसा लगा कि सुल्तान केन्द्रीयकृत निरंकुशता के सर्वोच्चय शिखर पर बैठना चाहता था।

मंहदी हुसैन ने इन विद्रोहों के पिछे सुल्तान मुहम्मद की उलेमा वर्ग के विरोध की नीति को उत्तरदायी ठहराया है। वे लिखते हैं कि मुहम्मद तुग़लक द्वारा निरंकुश शक्तियों के साथ सुल्तान के रूप में दिल्ली की गद्दी पर बैठने के बाद उसको विश्वास हो गया था कि वह मुज़ताहिद (कानूनों का व्याख्याकत्र्ता) की स्थिति प्राप्त कर चुका था और अपने ज्ञान के प्रकाश में मौलिक परिवर्तन करने के योग्य था। देवगिरी को दूसरी राजधानी बनाने से पहले दिल्ली से 727 हि°/1327-28 सिक्का जारी किया, जिस पर इस प्रकार लिखा था ''मुहम्मद-बिन-तुग़लक शाह मुही-ए-सुनान-ए-खातिमन् नाबिन (सुल्तान मुहम्मद तुग़लक ख़लीफ़ा के समय से खत्म धर्म का उद्धारक) लिखा था। जो यह घोषणा करता था कि इस्लाम समाप्त हो गया था, वह उसे पुर्नजीवित करेगा। उसने कुछ नया करने की सोची। पिछले सुल्तानों के विपरीत उसने तक़लीद इस्लाम और मुस्लिम रूढ़िवाद और इसकी शिक्षाओं परम्परागत आचरण जो दर्शन के साथ समायोजित नहीं था और इस्लामी कानूनों और कुरानिक ज्ञान के प्रभाव में, जो हठी उद्घोषणाओं के विरूद्ध था, से युद्ध की ठान ली। इस प्रकार के आचरण ने एक ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी जो रूढ़िवाद के संरक्षक-महाद्दीसिन, मुक़ातालीन मुताकालीमीन, मुफ़्ति फ़िकह- जिन्हें समान्यतय उलेमा कहा जाता था, ने इसे पंसद नहीं किया और वे उसके विरोधी हो गये। फ़िकह में कानून की जो अनुपयुक्त व्याख्या को वह दूरदराज तक फैले विस्तृत साम्राज्य, इसकी जनता की समस्याओं और विद्रोही तत्त्वों के लिए उपयुक्त नहीं मानता था। सुल्तान ने उनके न्याय के क्षेत्र में चले आ रहे अधिकारों से वंचित करने का निश्चय किया और उनकी विश्वसनीयता, ईमानदारी और उनके प्रशासनिक व सैनिक क्षेत्रों में सहायकों विशेषकर अमीर-ए-सादा पर शक करने लग गया था।

इस प्रकार ये एक विचारात्मक युद्ध था जोकि शासन को न्यायकारी बनता है। न्यायकारी शासन उलेमा की नजर में एक अत्याचारी और दमनकारी लगता है। बहाद्दीन गुरशास्प का विद्रोह इस प्रकार की विचारधारा के विरूद्ध था, जो युद्ध छिड़ने जा रहा था, उसकी पहली कडी बनता है।

संदर्भ ग्रन्थ-सूची

[1] बरनी, ज़ियाउद्दीन, तारीख़-ए-फ़िरोज़शाही अनुवादित, एस°ए°ए° रिज़वी, आदि तुर्क कालीन भारत, ख़लजी कालीन भारत, तुग़लक कालीन भारत, भाग-1, तुग़लक कालीन भारत, भाग-2, अलीगढ़ युनिवर्सिटी, अलीगढ़, प्रथम संस्करण, 1956.
[2] हुसैन, मैंहदी, द रेहला आफ इब्नबत्तूता, ओरियटल इन्सटीटूट, बडौदा, प्रथम संस्करण, 1953.
[3] गिब्ब, एच°ए°आर°, इब्नबत्तूता ट्रैवल्ज़ इन एशिया एण्ड अफ्रीका, पिलीग्रीम बुक प्राईवेट लिमटिड, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1998.
[4] निज़ामी, के°ए°, आन हिस्ट्री एण्ड हिस्ट्रोरियनज़ आफ मिडिवल इण्डिया, मुंशी राम मनोहर लाल, नई दिल्ली, 1987.
[5] हार्डी, पीटर, हिस्ट्रोरियनज़ आफ मिडिवल इण्डिया, मुंशी राम मनोहर लाल, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1997.
[6] हुसैन, मोहीबुल, हिस्ट्रोरियनज़ आफ मिडिवल इण्डिया, मुंशी राम मनोहर लाल, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1982.
[7] सिद्दकी, आई°एच°, प्रशो-अरेबिक सोर्सज़ आफ इम्फरमेशन आन द लाईफ एण्ड कण्डीशन इन द सल्तनत आफ देहली, मुंशी राम मनोहर लाल, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1992.